

योएल का ग्रंथ और लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या इकतालीस

Jeff Pippenger

2026-02-05

संख्या इकतालीस

लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस वसंत और शरद के पर्वों को प्रस्तुत करता है; और समग्र संरचना के भीतर, स्वयं संरचना में तथा उसके आरंभ और समापन की संरचनाओं की सिद्ध अनुरूपता में, इन पर्वों का निरूपण दैवीय रूप से अत्यन्त गहन है। वसंत के पर्व और शरद के पर्व परस्पर अनुरूप हैं। यह अध्याय बारम्बार पाल्मोनी, उस अद्भुत गणनाकर्ता, की गवाही देता है। यह अध्याय एक सौ चवालीस हज़ार के उत्तरकालीन संदेश के साथ दृढ़तापूर्वक और अद्भुत रीति से संबंध स्थापित करता है।

संख्या "23" प्रायश्चित का प्रतिनिधित्व करती है, जो दैवत्व और मानवता का संयोग है। "लैव्यव्यवस्था" नाम एक लाख चवालीस हज़ार के याजकत्व का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि सब भविष्यद्वक्ता अन्तिम दिनों के विषय में बोलते हैं, और अन्तिम दिनों के याजक वे हैं जिन्हें पतरस पवित्र याजकत्व ठहराता है। पतरस का यह पवित्र याजकत्व वे समझदार हैं जो उस ज्ञान की वृद्धि को समझते हैं जिससे "आधी रात की पुकार" का संदेश उत्पन्न होता है। मूर्ख—अथवा जैसा दानियेल उन्हें निरूपित करता है, दुष्ट—ज्ञान की वृद्धि को अस्वीकार करते हैं, और होशे हमें बताता है कि इसी कारण वे याजकों के रूप में अस्वीकृत कर दिए जाते हैं।

मेरे लोग ज्ञान के अभाव से नाश हो रहे हैं; क्योंकि तू ने ज्ञान को ठुकराया है, इसलिए मैं भी तुझे ठुकरा दूँगा, कि तू मेरे लिये याजक न रहेगा; क्योंकि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भूल दिया है, मैं भी तेरे पुत्रों को भूल जाऊँगा। जितना वे बढ़े, उतना ही उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया; इसलिये मैं उनकी महिमा को लज्जा में बदल दूँगा। होशे 4:6, 7.

इफ्राईम के वे मद्यपी, जिन्हें यशायाह 'महिमा का मुकुट' भी कहता है, उनकी महिमा 'लज्जा' में बदल दी जाती है। होशे विशेष रूप से यह निर्दिष्ट करता है कि जो अन्तिम दिनों में ज्ञान की वृद्धि को अस्वीकार करते हैं, वे लाओदीकिया की सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया हैं, क्योंकि उसने 'मेरे लोग' लिखा है। उसके लोग याजकों के रूप में अस्वीकार कर दिए जाएँगे, और यह अन्तिम और चौथी पीढ़ी में होगा, क्योंकि वह उनकी सन्तानों को भूल जाएगा, और सन्तानें अन्तिम पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

एकत्व

'लैव्यव्यवस्था 23' के शीर्षक का अर्थ है 'एक लाख चवालीस हज़ार के याजकत्व का प्रायश्चित'। यह सत्य केवल पुस्तक के नाम को अध्याय संख्या के साथ जोड़ने से ही निष्कर्षित किया जा सकता है। वह प्रायश्चित्त, जिसकी चर्चा लैव्यव्यवस्था तेईस करता है, 'at-one-ment' का अर्थ रखता है और दैवत्व तथा मानवत्व के संयोग का द्योतक है। यह संयोग परमेश्वर के वचन में अनेक प्रतीकों द्वारा निरूपित है; जिनमें से एक यह है कि मानव मन्दिर का दैवीय मन्दिर के साथ संयोजन होना है।

मानव मंदिर की संरचना "23" पुरुष और "23" स्त्री गुणसूत्रों की है। पतरस यह ठहराता है कि एक लाख चवालीस हज़ार का याजकत्व एक "आध्यात्मिक भवन" है। वे गुणसूत्र वैसे ही एक होते हैं जैसे पुरुष और स्त्री एक होते हैं, और जिन्हें परमेश्वर ने जोड़ा है, उन्हें कोई मनुष्य अलग न करे। विवाह at-one-ment का एक अन्य प्रतीक है। लैव्यव्यवस्था "23" का तात्पर्य स्वर्गीय महायाजक के मंदिर का उन याजकों के मंदिर के साथ संयोजन है, जो एक लाख चवालीस हज़ार हैं।

बाईस पद

लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस में वर्णित वसंत ऋतु के पर्व अध्याय के प्रथम बाईस पदों में निरूपित हैं, और शरद ऋतु के पर्व अध्याय के अंतिम बाईस पदों में निरूपित हैं। अंतिम पद, अर्थात् पद 44, 1844 का एक प्रतीक है, जब प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस सातवें महीने के दसवें दिन, लैव्यव्यवस्था तेईस की पूर्ति में, आरंभ हुआ। अध्याय तेईस बाईस-बाईस पदों के दो खंडों में विभाजित है; दोनों खंड इस तथ्य से तार्किक रूप से जुड़े हैं कि वे पर्वों का वर्णन करते हैं, परंतु वे इस प्रकार भी तार्किक रूप से पृथक हैं कि पहला खंड मसीह की बाहरी प्रांगण और पवित्र स्थान की याजकीय सेवकाई (जिसका प्रतीक वसंत ऋतु है) से संबंधित है, जबकि दूसरा खंड उनकी अति-पवित्र स्थान की याजकीय सेवकाई (जिसका प्रतीक शरद ऋतु है) से संबंधित है।

२२

वसंत और शरद दोनों पर्व बाईस पदों द्वारा निरूपित हैं, और वे पद हिब्रू वर्णमाला के साक्ष्य के अनुरूप हैं, जो "22" अक्षरों से बनी है। "22", "220" का दशमांश है, जो दिव्यता और मानवता के संयोजन का एक प्रतीक है। "220" यहूदा के तितर-बितर होने के 2,520 वर्षों की, और प्रायश्चित्त-दिवस तक के 2,300 वर्षों की, दोनों की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है। 2,520 का आरंभ-बिंदु 677 ई.पू. था, और 2,300 का आरंभ-बिंदु 457 ई.पू. था; इस प्रकार परमेश्वर की सेना को रौंदे जाने की भविष्यवाणी और परमेश्वर के पवित्रस्थान को रौंदे जाने की भविष्यवाणी के बीच कड़ी के रूप में दो सौ बीस वर्षों की पहचान होती है। वे दोनों भविष्यवाणियाँ 22 अक्टूबर, 1844 को प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस के आगमन पर समाप्त हुईं।

उस तिथि को, मानवीय मन्दिर को दैवीय मन्दिर के साथ एकीकृत करने का मसीह का कार्य आरम्भ हुआ, और उसी समय हबक्कूक 2:20 तथा यूहन्ना 2:20—दोनों—पूरित हुए। हबक्कूक ने यह निर्दिष्ट किया कि तब परमेश्वर अति-पवित्र स्थान में था, और यूहन्ना ने अभिलिखित किया कि वह मिलरवादी मन्दिर, जिसे विश्वास के द्वारा उस अति-पवित्र स्थान में प्रवेश करना था, 1798 से 1844 तक मिलरवादी मानवीय मन्दिर के निर्माण को चिह्नित करने वाली छियालिस-वर्षीय अवधि को पूरा कर चुका था। '46' वर्षों का इतिहास, जो '23' और '23' से मिलकर बनता है, विलियम मिलर के कार्य द्वारा निरूपित होता है, जिन्होंने 1831 में, किंग जेम्स बाइबल के प्रकाशन के '220' वर्ष पश्चात्, उस इतिहास का संदेश पहली बार प्रस्तुत करना आरम्भ किया। 1611 में प्रकाशित परमेश्वर का वचन, 1831 में '220' वर्ष बाद, एक मानवीय दूत के साथ संयोजित किया गया। वसन्त और शरद ऋतु के पर्व—दोनों—'22' पदों द्वारा निरूपित हैं।

एक ही विषय की दो रेखाओं के बाईस-बाईस पद यह अनिवार्य करते हैं कि, भविष्यवाणीय दृष्टि से, पहले बाईस पदों को अगले बाईस पदों पर अध्यारोपित किया जाए। इस प्रकार दोनों रेखाओं का संरेखण करने पर आप मंदिर-प्रांगण और पवित्र स्थान के उस कार्य—जिसका प्रतिनिधित्व वसंतकालीन पर्वों में होता है—को परम पवित्र स्थान में मसीह के कार्य के साथ जोड़ते हैं। इस भविष्यवाणीय स्तर पर यह दो मंदिरों के संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है, जो मसीह के एक-त्व के कार्य का निरूपण करता है।

जब पद एक से बाईस तक को पद तेईस से चवालीस तक के साथ संरेखित किया जाता है, तब एक भविष्यसूचक रेखा स्थापित होती है, जिसकी साक्षी हिब्रू वर्णमाला के बाईस अक्षर, संख्या "22" द्वारा निरूपित प्रतीकवाद, तथा पर्वों के साथ-साथ पवित्र इतिहास में उन पर्वों की परिपूर्ति द्वारा व्यक्त प्रतीकवाद देते हैं।

वसंतकालीन पर्वों का आरंभ सर्वप्रथम सातवें दिन के सब्त को चिन्हित करता है, और शरदकालीन पर्वों का समापन सातवें वर्ष के सब्त को चिन्हित करता है। मसीह ने, अल्फा और ओमेगा के रूप में, एक लाख चवालीस हजार के याजक-क्रम में "22" के दो गवाहों के आरंभ और अंत पर सब्त को स्थापित किया।

सातवें दिन का सब्त 1844 में प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिन के आरंभ में विशेष ज्योति था, और सातवें वर्ष के सब्त की ज्योति अंत की ज्योति है। सातवें दिन का सब्त लैव्यव्यवस्था "23" की पहली पवित्र सभा भी था, जैसे सातवें वर्ष

का सब्त उस अध्याय की अंतिम पवित्र सभा है। अध्याय "23" के याजकीय अनुक्रम में सब्त अल्फ़ा और ओमेगा है। पहला, अर्थात् सातवें दिन का सब्त, एक लाख चवालीस हज़ार के याजकत्व का अल्फ़ा है, और अंतिम, अर्थात् सातवें वर्ष का सब्त, एक लाख चवालीस हज़ार के याजकत्व का ओमेगा है।

जो परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, वे धर्म के सूर्य के प्रकाश में चलते हैं। वे परमेश्वर के सामने अपनी चाल-चलन को भ्रष्ट करके अपने उद्धारकर्ता का अपमान नहीं करते। उन पर स्वर्गीय ज्योति चमकती है। जैसे-जैसे यह पृथ्वी का इतिहास अपने अंत के निकट आता है, मसीह के विषय में, और उससे संबंधित भविष्यवाणियों के विषय में, उनका ज्ञान बहुत बढ़ता जाता है। परमेश्वर की दृष्टि में वे अनन्त मूल्य के हैं; क्योंकि वे उसके पुत्र के साथ एकता में हैं। उनके लिए परमेश्वर का वचन अतुलनीय रूप से सुंदर और मनोहर है। वे उसकी महत्ता को देखते हैं। सत्य उनके लिए उद्घाटित होता है। देहधारण का सिद्धान्त कोमल आभा से आलोकित हो उठता है। वे देखते हैं कि पवित्र शास्त्र वह कुंजी है जो सब भेद खोलती है और सब कठिनाइयों का समाधान करती है। जिन्होंने प्रकाश को ग्रहण करने और प्रकाश में चलने से इंकार किया है, वे भक्ति का भेद समझने में असमर्थ होंगे; परन्तु जिन्होंने क्रूस उठाने और यीशु का अनुसरण करने में संकोच नहीं किया, वे परमेश्वर के प्रकाश में प्रकाश देखेंगे। द साउदर्न वॉचमैन, 4 अप्रैल, 1905.

यहाँ, 'इस पृथ्वी के इतिहास के समापन के निकट', प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस के अंत में, 'देहधारण का सिद्धान्त' वैसी ही 'कोमल' प्रभा से आलोकित होता है, जैसी प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस के आरम्भ में सातवें दिन के सब्त का सिद्धान्त आलोकित हुआ था।

"यीशु ने सन्दूक का आवरण उठाया, और मैंने पत्थर की पट्टिकाएँ देखीं, जिन पर दस आज्ञाएँ लिखी थीं। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि दस उपदेशों के बिलकुल मध्य में चौथी आज्ञा थी, और उसके चारों ओर कोमल प्रकाश का आभासमंडल उसे घेरे हुए था। स्वर्गदूत ने कहा: 'यह दस में से एकमात्र है जो उस जीवित परमेश्वर को परिभाषित करता है, जिसने आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है, सब कुछ सृजा। जब पृथ्वी की नींव डाली गई, तब सब्त की नींव भी डाली गई।'" टेस्टिमोनीज़, खंड 1, 75.

लैव्यव्यवस्था "23" सातवें दिन के सब्त से आरम्भ होती है, जो एक "नींव" है; और सातवें वर्ष का सब्त, वसन्त और शरद के पर्वों द्वारा निरूपित, याजकों की गवाही का समापन करता है। सातवें वर्ष का सब्त उस मन्दिर का प्रतिनिधित्व करता है जो उस नींव पर निर्मित है। सातवें वर्ष का सब्त अन्त में 2,520 द्वारा निरूपित है, जैसे सातवें दिन का सब्त 2,300 द्वारा निरूपित है। सातवें वर्ष का सब्त "अवतार के सिद्धान्त" का प्रतिनिधित्व करता है। सातवें दिन का सब्त सृष्टिकर्ता का चिन्ह है, और सातवें वर्ष का सब्त देवत्व और मनुष्यता के संयुक्त होने का चिन्ह है।

रेखाओं का संरेखण

जब हम लैव्यव्यवस्था के तेईसवें अध्याय में वर्णित वसंतकालीन पर्वों को शरदकालीन पर्वों के साथ मिलाकर देखते हैं, तब फसह के पर्व के अगले ही दिन सात दिनों का अखमीरी रोटियों का पर्व आता है, और अखमीरी रोटियों के इस सात-दिवसीय पर्व के आरंभ होने के अगले दिन पहिलौठे फलों का पर्व होता है। तीन दिनों में तीन संकेतचिह्न।

अखमीरी रोटियों का सात-दिवसीय पर्व एक पवित्र सभा से आरम्भ होता है और एक पवित्र सभा पर ही समाप्त होता है। अखमीरी रोटियों का पर्व आरम्भ होने के अगले दिन, पहिलौठे फलों का पर्व आता है, और उसमें वसंतकालीन जौ के पहिलौठे फल का अर्पण सम्मिलित है। पेन्टेकोस्ट, जिसे सप्ताहों का पर्व भी कहा जाता है, पहिलौठे फलों के पर्व के पचास दिन बाद होता है। पहिलौठे फलों का वही पर्व सात सप्ताह की उस अवधि का आरम्भ चिह्नित करता है जो उनचासवें दिन समाप्त होती है, जिसके बाद पेन्टेकोस्ट, जिसका अर्थ 'पचास' है, आता है।

फसह की शुरुआत चौदहवें दिन संध्या के समय होती है। फसह एक पवित्र सभा नहीं है।

तब पंद्रहवें दिन, बेखमीरी रोटियों का सात दिनों का पर्व आरंभ होता है। सात दिनों के इस पर्व का पहला दिन और अंतिम दिन पवित्र सभाएँ हैं।

अगले दिन, सोलहवाँ दिन, प्रथम फल का दिन आता है। तब वे सात सप्ताह आरम्भ होते हैं जो पेंतेकोस्त के पर्व से चिह्नित होते हैं, और पेंतेकोस्त वसंत-ऋतु और शरद-ऋतु के पर्वों में निरूपित सात पवित्र सभाओं में से एक है। प्रथम फल पवित्र सभा नहीं है।

तब सातवें महीने के प्रथम दिन तुरहियों का पर्व एक पवित्र सभा है।

सातवें महीने के दसवें दिन का प्रायश्चित्त दिवस एक पवित्र सभा है, परन्तु पर्व नहीं है।

झोपड़ियों के पर्व का पहला दिन पवित्र सभा है। सात-दिवसीय पर्व के पश्चात् झोपड़ियों के पर्व का आठवाँ दिन आता है, यद्यपि यह आठवाँ दिन उन कालावधियों के बाहर माना जाता है जिनका प्रतिनिधित्व पर्व करते हैं। वह आठवाँ दिन पवित्र सभा है।

जब आप उन पर्वों का परिचय कराने वाले सातवें दिन के सब्त को सम्मिलित करते हैं, तो यह संख्या सात पवित्र सभाओं तक पहुँचती है। सात पवित्र सभाएँ और सात पर्व तो हैं, परन्तु उनका परस्पर संरेखण पवित्र सभाओं के संरेखण से भिन्न है। प्रथम और अंतिम मार्गचिह्न सब्त हैं—पहला दिन के लिए, फिर वर्ष के लिए। अल्फ़ा और ओमेगा सब्तों के बीच जिन पर्वों की पहचान की गई है, उनके भीतर सात पर्व और पाँच पवित्र सभाएँ हैं। यदि आप अल्फ़ा सातवें दिन का सब्त और ओमेगा सातवें वर्ष का सब्त सम्मिलित करें, तो सात पवित्र सभाएँ और सात पर्व हो जाते हैं। यह समझा जाता है कि मण्डपों के पर्व का आठवाँ दिन पर्वों का भाग नहीं है, और यह “आठवाँ जो सात में से है” की पहली उत्पन्न करता है। मैं यहाँ जिस बात की ओर संकेत कर रहा हूँ, वह यह है कि यीशु ने पाल्मोनी के रूप में अध्याय “23” के भीतर संख्याओं की विविधताओं का विन्यास सर्वथा विस्मयकारी रीति से किया है।

वसन्त

वसंतकालीन पर्वों में खमीररहित रोटी की सात-दिवसीय पर्व-अवधि सम्मिलित है, जिसके आरम्भ में एक अल्फ़ा पवित्र सभा और अन्त में एक ओमेगा पवित्र सभा होती है। पिन्तेकुस्त वसंतकालीन पर्वों में तीसरी पवित्र सभा है। पिन्तेकुस्त सात सप्ताह की अवधि के पश्चात् आता है, जो पचासवें दिन के उत्सव पर समाप्त होती है। वसंतकालीन पर्वों की पहचान चार पर्व-दिवसों और तीन अवधियों से होती है। फसह, खमीररहित रोटी, पहिलौटी के फल और पिन्तेकुस्त ये चार पर्व-दिवस हैं; और तीन अवधियाँ हैं—खमीररहित रोटी के सात दिन; वे उनचास दिन, जो पिन्तेकुस्त के पचासवें दिन से पूर्व हैं और उस पचासवें दिन को भी सम्मिलित करते हैं; और प्रथम तीन दिन, जो तीन चरणों से युक्त एक अवधि हैं।

फसह काल का प्रथम-फल अर्पण पिन्तेकुस्त के दिन के प्रथम-फल अर्पण के साथ संगति में है; फसह के तीन-दिवसीय काल में जौ के प्रथम-फलों के अर्पण, और पिन्तेकुस्त की उनचास/पचास-दिवसीय अवधि के समापन पर पिन्तेकुस्त के दिन गेहूँ के प्रथम-फल का अर्पण।

पतन

शरदकालीन पर्व एक नियत पर्व-दिवस से आरम्भ होते हैं, जिससे न्याय में परिणति होने वाली दस-दिवसीय अवधि आरम्भ होती है। न्याय के पाँच दिन पश्चात् सात दिनों का एक पर्व होता है, जिसमें प्रथम और अंतिम दिन पवित्र सभाएँ ठहराए गए हैं। पंद्रहवें से बाईसवें दिन तक मण्डपों का पर्व मनाया जाता है और फिर तेईसवें दिन भूमि का सब्त चिह्नित किया जाता है।

जब हम शरद-ऋतु के पर्वों को लेकर उन्हें वसंत-ऋतु के पर्वों पर अध्यारोपित करते हैं, तब हमारे पास दो रेखाएँ होती हैं, जो दोनों ही बाईस पदों द्वारा निरूपित होती हैं; अतः वे हिब्रू वर्णमाला के बाईस अक्षरों द्वारा निरूपित होती हैं। जब ऐसा किया जाता है, तो प्रथम मार्गचिह्न सातवें दिन के सब्त की पवित्र सभा है, और अंतिम मार्गचिह्न सातवें वर्ष के सब्त की पवित्र सभा है।

और सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी, जब तुम भूमि की उपज एकत्र कर लो, तब तुम यहोवा के लिए सात दिन तक पर्व मानोगे: पहले दिन विश्राम का दिन होगा, और आठवें दिन भी विश्राम का दिन होगा। लैव्यवस्था 23:39.

पिन्तेकुस्त प्रारंभिक वर्षा थी और तंबुओं का पर्व अंतिम वर्षा है। पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा के उंडेले जाने को एक दिन द्वारा प्रतीकित किया गया था, और तंबुओं के पर्व द्वारा प्रतीकित पवित्र आत्मा का उंडेला जाना एक ऐसा काल है जो समाप्त होता है, और तब उसके पश्चात एक विश्रामदिन आता है—अर्थात् सात दिनों के उपरांत आठवाँ दिन। पवित्र आत्मा के उंडेले जाने की अंतिम अभिव्यक्ति के बाद आने वाला यह विश्रामदिन पृथ्वी के सहस्र-वर्षीय विश्राम का प्रतीक है।

क्लेश के समय हम सब नगरों और गाँवों से भाग निकले, परन्तु दुष्टों ने हमारा पीछा किया, जो तलवार लेकर संतों के घरों में घुस गए। उन्होंने हमें मार डालने को तलवार उठाई, पर वह टूट गई और तिनके के समान शक्तिहीन होकर गिर पड़ी। तब हम सब मुक्ति के लिए दिन-रात पुकारते रहे, और वह पुकार परमेश्वर के सामने पहुँची। सूर्य उदय हुआ, और चन्द्रमा ठहर गया। जलधाराएँ बहना बन्द हो गईं। घने, घोर मेघ उठे और परस्पर टकराने लगे। परन्तु आकाश में एक निर्मल स्थान था, जहाँ स्थिर महिमा छाई हुई थी; वहीं से परमेश्वर का स्वर, बहुत-से जलों के समान, निकला, जिसने आकाश और पृथ्वी को हिला दिया। आकाश खुलता और बन्द होता रहा, और बड़ी हलचल में था। पहाड़ पवन में सरकण्डे के समान काँप उठे और चारों ओर दाँतेदार शिलाखण्ड उगलने लगे। समुद्र हाँडी के समान खौलने लगा और स्थल पर पत्थर उगलने लगा। और जब परमेश्वर ने यीशु के आगमन का दिन और घड़ी घोषित की, तथा अपनी प्रजा को अनन्त वाचा प्रदान की, तब वह एक वाक्य बोलता, और फिर ठहर जाता, जब तक कि वे वचन सारी पृथ्वी में गूँज न जाएँ। परमेश्वर का इस्राएल अपनी आँखें ऊपर लगाए खड़ा रहा, यहोवा के मुख से निकलते हुए उन वचनों को सुनता हुआ, जो पृथ्वी भर में अत्यन्त प्रबल गर्जन के निनादों के समान गूँजते चले गए। वह अत्यन्त भयानक रीति से गम्भीर था। और प्रत्येक वाक्य के अंत में संत पुकार उठे, 'महिमा! हल्लेलूयाह!' उनके मुखमण्डल परमेश्वर की महिमा से प्रदीप्त हो उठे; और वे उसी महिमा से ऐसे दमकते थे, जैसे सीने से उतरते समय मूसा का मुख दमका था। उस महिमा के कारण दुष्ट उनकी ओर देख नहीं सकते थे। और जब जिन्होंने उसके सब्त को पवित्र रखकर परमेश्वर का आदर किया था, उन पर वह कभी न समाप्त होने वाली आशीष घोषित की गई, तब पशु और उसकी प्रतिमा पर विजय का एक प्रबल जयघोष उठा।

तब यौबील का आरम्भ हुआ, जब भूमि को विश्राम करना था। अर्ली राइटिंग्स, 34.

यौबील पचासवाँ वर्ष है; यह सात-सात वर्षों के सात चक्रों के पश्चात् आता है, और उन उनचास दिनों के तुल्य है जो पेन्तेकोस्त के पचासवें दिन तक ले जाते हैं। जब शरद-ऋतु के पर्वों की रेखा वसंत-ऋतु के पर्वों के साथ मिलाई जाती है, तब उनचास दिन पेन्तेकोस्त तक ले जाते हैं; और वही पेन्तेकोस्त मण्डपों के पर्व की सात-दिनी अवधि के आरम्भ को चिह्नित करता है। पेन्तेकोस्त और मण्डपों का पर्व परस्पर संरेखित हैं, और मिलकर वे अन्तिम वर्षा की उस अवधि की पहचान कराते हैं, जो शीघ्र-आगामी रविवार-का-कानून पर आरम्भ होती है और तब तक चलती रहती है जब तक अनुग्रह-काल का समापन न हो जाए, प्रभु लौट न आएँ, और तत्पश्चात् पृथ्वी विश्राम न कर ले, जैसा कि सप्तवर्षीय सब्त द्वारा निरूपित है, जो मण्डपों के पर्व के सात दिनों के सापेक्ष आठवाँ है।

जब हम बाईस पदों वाली दोनों पंक्तियों को एकत्र करते हैं, तो ऐसा हम कई कारणों से करते हैं। दोनों पंक्तियाँ बाईस पदों की हैं; बाईस, दो सौ बीस का दशमांश है, जो दैवत्व तथा मानवत्व के संयोग का प्रतीक है।

दोनों पंक्तियाँ इब्रानी वर्णमाला के बाईस अक्षरों का निरूपण करती हैं।

दोनों रेखाएँ पर्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

दोनों रेखाएँ वर्ष की दो कटनी ऋतुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

दोनों रेखाएँ प्रांगण, पवित्र स्थान और परमपवित्र स्थान में मसीह के कार्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। लैव्यवस्था का अर्थ याजकगण है, और यीशु स्वर्गीय महायाजक हैं। इन कारणों से, लैव्यवस्था अध्याय तेईस की चवालीस आयतों

पर रेखा पर रेखा की पद्धति को लागू करना औचित्यसंगत है।

पिन्तेकुस्त मसीही धर्म के लिए प्रारम्भिक वर्षा था, और मण्डपों का पर्व मसीही धर्म के लिए अन्तिम वर्षा है। अतएव हम वसंत ऋतु के 'पिन्तेकुस्त के दिन' को शरद ऋतु के 'मण्डपों के सात दिन' के साथ संरेखित करते हैं। जब बहन व्हाइट ने कहा, 'क्लेश के समय हम सब नगरों और ग्रामों से भाग निकले', तो वे उस काल की पहचान कर रही हैं जब उत्पीड़न के कारण परमेश्वर के लोग निर्जन प्रदेश में निवास कर रहे होंगे। मण्डपों के पर्व के काल में झोपड़ियों में निवास करना उस इतिहास का प्रतिरूप है जो सीधे पृथ्वी के लिए सब्तीय जुबली के विश्राम तक ले जाता है।

पिन्तेकुस्त का दिन मण्डपों के सात-दिवसीय पर्व की शुरुआत को चिह्नित करता है। तत्पश्चात्, योबेल-वर्ष का प्रतिनिधित्व आठवें दिन द्वारा होता है, अर्थात् मण्डपों के सात दिनों का आठवाँ दिन। मण्डपों के पर्व से पाँच दिन पूर्व प्रायश्चित्त का दिन था। अतः मण्डपों के आरम्भ को चिह्नित करने वाले पिन्तेकुस्त से पाँच दिन पूर्व न्याय चिह्नित किया जाता है। प्रायश्चित्त के दिन के न्याय से दस दिन पूर्व तुरहियों का पर्व होता है। जब इन रेखाओं को जोड़ा जाता है, तब पिन्तेकुस्त द्वारा निरूपित रविवार के कानून से पाँच दिन पूर्व न्याय चिह्नित किया जाता है। उससे दस दिन पूर्व, तुरहियों का पर्व चिह्नित किया जाता है।

मसीह का बपतिस्मा उनकी मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान का प्रतीक था। इन तीन चरणों का निरूपण फसह के अवसर पर उनकी मृत्यु, सब्त के दिन उनके दफ़न और विश्राम, तथा रविवार को उनके पुनरुत्थान से होता है। उनकी मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान के तीन दिन मिलकर, तीन चरणों से बना एक मात्र मार्ग-चिह्न बनाते हैं। अतः हम वसन्त और शरद ऋतु के पर्वों की दो रेखाओं का संयोजन पुनरुत्थान से आरम्भ करते हैं। तीसरे दिन उनके पुनरुत्थान से एक उनचास-दिवसीय अवधि आरम्भ होती है, जो पिन्तेकुस्त तक ले जाती है; और पिन्तेकुस्त ही रविवार का कानून है। उस उनचास-दिवसीय अवधि से पहले अखमीरी रोटी का पर्व होता है, जो प्रथम फल के दिन से एक दिन पूर्व आरम्भ होता है और उस दिन के बाद पाँच दिन तक विस्तृत रहता है।

पहिलौठी उपज के पुनरुत्थान से लेकर रविवार के कानून तक उनचास दिन हैं, और रविवार का कानून पचासवाँ दिन है। रविवार के कानून से पाँच दिन पूर्व न्याय निरूपित है, और उस न्याय से दस दिन पूर्व तुरहियों की चेतावनी चिह्नित है। पुनरुत्थान पहला मार्गचिह्न है; फिर पाँच दिन बाद बेखमीर रोटियों की अवधि समाप्त होती है। बेखमीर रोटियों की अवधि समाप्त होने के तीस दिन बाद तुरहियों की चेतावनी घटित होती है। उसके दस दिन बाद प्रायश्चित्त के दिन का न्याय चिह्नित है, और पाँच दिन बाद पिन्तेकुस्त का रविवारीय कानून आ पहुँचता है।

यह वसंत और शरद के पर्वों के 'पंक्ति पर पंक्ति' अनुप्रयोग में सात मार्गचिह्नों की पहचान करता है; खमीररहित रोटी का आरम्भ, पुनरुत्थान, खमीररहित रोटी का समापन, तुरहियों की चेतावनी, न्याय, पिन्तेकुस्त और पिछली वर्षा। वे सात मार्गचिह्न एक 'अल्फ़ा' सातवें दिन के सब्त और एक 'ओमेगा' सातवें वर्ष के सब्त के भीतर स्थापित हैं। दोनों सब्तों के बीच अवस्थित ये सात मार्गचिह्न पाँच-दिन की अवधि, उसके बाद तीस-दिन की अवधि, फिर दस-दिन की अवधि, फिर पाँच-दिन की अवधि और अंततः सात-दिन की अवधि को पृथक कर चिह्नित करते हैं।

इसके बाद जब हम मसीह के पुनरुत्थान को संरेखित करते हैं, तो हमें एक चालीस-दिवसीय अवधि मिलती है, जिसके दौरान उन्होंने शिष्यों को 'आमने-सामने' शिक्षा दी और तत्पश्चात् स्वर्गारोहण किया। फिर दस दिनों तक शिष्य ऊपरी कोठरी में रहे। वे दस दिन पिन्तेकुस्त के दिन पर आकर समाप्त हुए, जो रविवार का विधान है। यह लैव्यव्यवस्था '23' द्वारा निरूपित याजकों की रेखा में एक चालीस-दिवसीय और एक दस-दिवसीय अवधि जोड़ता है।

पुनरुत्थान से अखमीरी रोटी के पर्व के अन्त तक पाँच दिन हैं, फिर तुरही की चेतावनी तक तीस दिन, फिर मसीह के स्वर्गारोहण तक पाँच दिन, फिर न्याय तक पाँच दिन, फिर पेन्टेकोस्ट की अन्तिम वर्षा के सात दिनों तक पाँच दिन।

खमीर रहित रोटियों के सात दिनों का आरम्भ होने के अगले दिन पहिलौठे फलों का पुनरुत्थान होता है। यह पुनरुत्थान खमीर रहित रोटियों के सात दिनों के भीतर घटित होता है, और पुनरुत्थान के पाँच दिन बाद खमीर रहित रोटियों की अवधि समाप्त हो जाती है।

अखमीरी रोटी की समाप्ति के तीस दिन पश्चात्, नरसिंगे चेतावनी का संकेत देते हैं।

नरसिंगों द्वारा दी गई चेतावनी के पाँच दिन बाद, चालीस दिन तक शिक्षा देने के उपरान्त, मसीह स्वर्गारोहित हुए। उनके स्वर्गारोहण के साथ ऊपरी कोठरी में दस दिनों का प्रारम्भ हुआ।

तब उनके स्वर्गारोहण के पाँच दिन पश्चात् न्याय नियत किया जाता है।

पाँच दिन पश्चात् पेन्तेकोस्त का रविवार-विधान अन्तिम वर्षा की सात-दिनीय अवधि का प्रारम्भ करता है।

एक लाख चवालीस हज़ार वे हैं जो मेमेंना जहाँ-जहाँ जाता है, उसके पीछे-पीछे चलते हैं। एलिय्याह और मूसा 18 जुलाई, 2020 को घात कर मार डाले गए। उन्हें वहीं मार डाला गया जहाँ हमारे प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। मसीह का पुनरुत्थान 31 दिसम्बर, 2023 के पुनरुत्थान का पूर्वरूप था। उस तिथि से पहले, जुलाई 2023 में, जंगल में पुकारने वाली एक आवाज़ ने एक ऐसा संदेश सुनाना आरम्भ किया जो अखमीरी रोटी के रूप में निरूपित था। खमीर भ्रांति, कपट और पाप का प्रतीक है, और जंगल से आया संदेश अखमीरी था। 31 दिसम्बर, 2023 से लेकर रविवार के क़ानून तक, लैव्यव्यवस्था 23 ने एक लाख चवालीस हज़ार के प्रायश्चित्त की रूपरेखा निर्धारित की है। वह रूपरेखा मिलर के स्वप्न, मलाकी तीन, और प्रकाशितवाक्य उन्नीस के स्वर्ग के झरोखों के साथ सामंजस्य रखती है। यह 27 से 34 ईस्वी के पवित्र सप्ताह के तीसरे और नौवें पहर से भी मेल खाती है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

'ज्ञान के द्वारा कक्ष समस्त बहुमूल्य और मनोहर धन-वैभव से परिपूर्ण किए जाएँगे।'

मन और आत्मा के लिए, जैसे शरीर के लिए भी, परमेश्वर का यह नियम है कि शक्ति प्रयास से प्राप्त होती है। विकास अभ्यास से होता है। इस नियम के अनुरूप, परमेश्वर ने अपने वचन में मानसिक और आध्यात्मिक विकास के साधन प्रदान किए हैं।

बाइबल में वे सभी सिद्धांत हैं जिन्हें मनुष्यों को समझना चाहिए ताकि वे इस जीवन के लिए या आने वाले जीवन के लिए योग्य बन सकें। और इन सिद्धांतों को हर कोई समझ सकता है। जिसके भीतर उसकी शिक्षा की कद्र करने की भावना हो, वह बाइबल का एक भी अंश पढ़े और उससे कोई न कोई उपयोगी विचार पाए बिना नहीं रह सकता। परन्तु बाइबल की सबसे मूल्यवान शिक्षा कभी-कभार या असंबद्ध अध्ययन से नहीं मिलती। उसकी महान सत्य-प्रणाली इस प्रकार प्रस्तुत नहीं की गई है कि उतावले या लापरवाह पाठक उसे पहचान लें। उसके अनेक खजाने सतह से बहुत नीचे छिपे हैं, और वे केवल लगनपूर्ण शोध और निरंतर परिश्रम से ही प्राप्त किए जा सकते हैं। जो सत्य मिलकर उस महान संपूर्णता का निर्माण करते हैं, उन्हें 'यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा' ढूँढ़कर इकट्ठा करना होगा। यशायाह 28:10.

जब इस प्रकार उन्हें खोजकर एकत्र किया जाएगा, तो वे एक-दूसरे के साथ पूर्णतः अनुरूप पाए जाएँगे। प्रत्येक सुसमाचार अन्य सुसमाचारों का पूरक है; हर भविष्यवाणी किसी अन्य की व्याख्या है; हर सत्य किसी अन्य सत्य का विकास है। सुसमाचार यहूदी व्यवस्था के पूर्वरूपों को स्पष्ट कर देता है। परमेश्वर के वचन में हर सिद्धांत का अपना स्थान है, हर तथ्य का अपना महत्व। और संपूर्ण संरचना, अपने विन्यास और निष्पादन में, अपने रचयिता की गवाही देती है। ऐसी संरचना की कल्पना या रचना अनन्त की बुद्धि के सिवा कोई नहीं कर सकता था।

विभिन्न भागों का अन्वेषण करने और उनके परस्पर संबंध का अध्ययन करने पर, मानव मन की सर्वोच्च क्षमताएँ तीव्र सक्रियता में आ जाती हैं। ऐसे अध्ययन में संलग्न होकर मानसिक शक्ति का विकास किए बिना कोई नहीं रह सकता।

बाइबल-अध्ययन का बौद्धिक महत्त्व केवल सत्य की खोज कर उसे एकत्र करने में ही नहीं है। यह उन विषयों को समझने के लिए आवश्यक प्रयास में भी निहित है जो उसमें प्रस्तुत किए गए हैं। जो मन केवल साधारण बातों में ही लगा रहता है, वह सिकुड़कर कमजोर पड़ जाता है। यदि उसे कभी महान और दूरगामी सत्यों को समझने का

कार्य न दिया जाए, तो समय के साथ वह विकास की शक्ति खो देता है। इस अवनति से बचाव और विकास के लिए प्रेरणा के रूप में परमेश्वर के वचन के अध्ययन की बराबरी कोई और नहीं कर सकता। बौद्धिक प्रशिक्षण के साधन के रूप में बाइबल किसी भी अन्य पुस्तक से, बल्कि सब पुस्तकों को मिलाकर भी, अधिक प्रभावी है। इसके विषयों की महानता, इसकी उक्तियों की गरिमामय सरलता, इसके बिंबों की सुंदरता—ये सब विचारों को जिस प्रकार जागृत कर ऊँचा उठाती हैं, वैसा और कुछ नहीं कर सकता। दिव्य प्रकाशन के विराट सत्यों को समझने के प्रयास जितनी मानसिक शक्ति कोई अन्य अध्ययन नहीं दे सकता। इस प्रकार अनंत के विचारों से साक्षात्कार में आया मन अनिवार्यतः विस्तृत और सुदृढ़ हो जाता है।

और आध्यात्मिक प्रकृति के विकास में बाइबल की शक्ति और भी महान है। मनुष्य, जिसे परमेश्वर के साथ संगति के लिए रचा गया है, केवल ऐसी संगति में ही अपना वास्तविक जीवन और विकास पा सकता है। परमेश्वर में अपना सर्वोच्च आनंद पाने के लिए रचा गया, उसे और कहीं वह वस्तु नहीं मिल सकती जो हृदय की लालसाओं को शांत करे और आत्मा की भूख-प्यास को तृप्त करे। जो व्यक्ति निष्कपट और सीखने योग्य मन से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता है, उसकी सच्चाइयों को समझने का प्रयत्न करता है, वह उसके लेखक के सान्निध्य में लाया जाएगा; और, उसकी अपनी इच्छा के अतिरिक्त, उसके विकास की संभावनाओं की कोई सीमा नहीं है।

अपनी शैली और विषयों की व्यापक विविधता में बाइबल में हर मन के लिए आकर्षण और हर हृदय को स्पर्श करने वाला कुछ न कुछ है। इसके पृष्ठों में सबसे प्राचीन इतिहास; जीवन के प्रति सर्वाधिक सच्ची जीवनिर्णय; राज्य के नियंत्रण और गृहस्थी के विनियमन के लिए शासन-सिद्धांत—ऐसे सिद्धांत जिनकी बराबरी मानवीय बुद्धि ने कभी नहीं की—पाए जाते हैं। इसमें सबसे गहन दर्शन, और सबसे मधुर, सबसे उदात्त, सबसे भावावेशपूर्ण तथा सबसे करुणामय कविता निहित हैं। इस प्रकार विचार करने पर भी बाइबल की रचनाएँ मूल्य में किसी भी मानव लेखक की कृतियों से अपरिमेय रूप से श्रेष्ठ हैं; परंतु जब उन्हें उस महान केंद्रीय विचार के संबंध में देखा जाता है, तो उनका दायरा असीम रूप से व्यापक और उनका मूल्य असीम रूप से अधिक हो जाता है। इस विचार के प्रकाश में देखे जाने पर प्रत्येक विषय का नया महत्त्व होता है। सबसे सरल रूप में कही गई सच्चाइयों में भी ऐसे सिद्धांत निहित होते हैं जो स्वर्ग जितने ऊँचे हैं और जो अनंतकाल को अपने में समेट लेते हैं।

बाइबल का केन्द्रीय विषय—वह विषय जिसके चारों ओर पूरी पुस्तक की अन्य सब बातें केन्द्रित हैं—उद्धार की योजना है, अर्थात् मानव आत्मा में परमेश्वर की प्रतिमा का पुनर्स्थापन। एदेन में उच्चारित वचन में आशा के प्रथम संकेत से लेकर प्रकाशितवाक्य की उस अन्तिम महिमामय प्रतिज्ञा तक, 'वे उसका मुख देखेंगे; और उसका नाम उनके ललाटों पर होगा' (प्रकाशितवाक्य 22:4), बाइबल की हर पुस्तक और हर पद का केन्द्रीय संदेश इसी अद्भुत विषय का उद्घाटन है—मनुष्य का उत्थान—परमेश्वर की वह सामर्थ्य, 'जो हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजय देती है।' 1 कुरिन्थियों 15:57.

जो इस विचार को ग्रहण करता है, उसके समक्ष अध्ययन का एक अनन्त क्षेत्र फैला हुआ है। उसके पास वह कुंजी है जो उसके लिये परमेश्वर के वचन के समस्त कोषागार को उद्घाटित कर देगी।

उद्धार का विज्ञान विज्ञानों का विज्ञान है; वह विज्ञान जो स्वर्गदूतों और पतन-रहित संसारों के समस्त बुद्धिमान प्राणियों का अध्ययन-विषय है; वह विज्ञान जो हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता का ध्यान आकर्षित करता है; वह विज्ञान जो अनंत के मन में पाले गए अभिप्राय—'अनादिकाल से मौन रखे गए' (रोमियों 16:25, R.V.)—में समाहित है; वह विज्ञान जो अनंत युगों तक परमेश्वर के उद्धार-प्राप्त जनों का अध्ययन-विषय रहेगा। यह वह सर्वोच्च अध्ययन है जिसमें मनुष्य संलग्न हो सकता है। जैसा कोई अन्य अध्ययन नहीं कर सकता, यह बुद्धि को प्रखर करेगा और आत्मा को उन्नत करेगा।

'ज्ञान की श्रेष्ठता यह है कि बुद्धि जिनके पास होती है, उन्हें जीवन प्रदान करती है।' 'जो वचन मैं तुम से कहता हूँ,' यीशु ने कहा, 'वे आत्मा हैं, और वे जीवन हैं।' 'अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे, जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, और जिसे तू ने भेजा, उसे जानें।' सभोपदेशक 7:12; यूहन्ना 6:63; 17:3, R.V.

वह सृजनात्मक शक्ति जिसने संसारों को अस्तित्व में लाया, वह परमेश्वर के वचन में है। यह वचन सामर्थ्य प्रदान करता है; यह जीवन को जन्म देता है। प्रत्येक आज्ञा एक प्रतिज्ञा है; इच्छा से स्वीकार की गई और आत्मा में ग्रहण की गई, यह अपने साथ अनंत परमेश्वर का जीवन ले आती है। यह स्वभाव को रूपांतरित करती है और आत्मा को परमेश्वर की छवि में पुनः रचती है।

इस प्रकार प्रदत्त जीवन उसी प्रकार पोषित होता है। 'परमेश्वर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन से' (मत्ती 4:4) मनुष्य जीवित रहेगा।

मन—अर्थात् आत्मा—उसी से विकसित होता है, जिसका वह आहार ग्रहण करता है; और यह निश्चय करना कि उसे किससे आहार मिले, हमारे ही ऊपर निर्भर है। प्रत्येक व्यक्ति के वश में है कि वह उन विषयों का चुनाव करे जो उसके चिंतन को व्याप्त करें और उसके चरित्र को आकार दें। जिस किसी मनुष्य को पवित्रशास्त्र तक पहुँच का विशेषाधिकार प्राप्त है, उसके विषय में परमेश्वर कहता है, 'मैंने उसके लिए अपनी व्यवस्था की महान बातें लिखी हैं।' 'मुझे पुकार, और मैं तुझे उत्तर दूँगा, और तुझे बड़ी और गूढ़ बातें दिखाऊँगा, जिन्हें तू नहीं जानता।' होशे 8:12; यिर्मयाह 33:3.

अपने हाथों में परमेश्वर का वचन लिये हुए, प्रत्येक मनुष्य—जीवन में उसकी स्थिति चाहे जहाँ निर्धारित हुई हो—अपने मनोनुकूल ऐसा सहचर्य प्राप्त कर सकता है। इसके पृष्ठों में वह मानव जाति के महानतम और श्रेष्ठ जनों से संवाद कर सकता है, और जब अनन्त परमेश्वर मनुष्यों से संवाद करता है, तब वह उसकी वाणी सुन सकता है। जैसे-जैसे वह उन विषयों का अध्ययन और मनन करता है जिनमें 'स्वर्गदूत देखने की अभिलाषा रखते हैं' (1 Peter 1:12), वह उनका सहचर्य भी प्राप्त कर सकता है। वह स्वर्गीय शिक्षक के पदचिह्नों का अनुसरण कर सकता है, और जैसे उसने पर्वत पर, मैदान में तथा समुद्र के तट पर शिक्षा दी थी, वैसे ही उसकी वाणी को सुन सकता है। वह इस संसार में स्वर्ग के वातावरण में वास कर सकता है, पृथ्वी के शोकाकुल और प्रलोभित जनों को आशा के विचार और पवित्रता की आकांक्षाएँ बाँटते हुए; और स्वयं अदृश्य के साथ संगति में और निकट, और भी निकट आता हुआ; प्राचीन काल के उस जन के समान जो परमेश्वर के साथ चलता था, अनन्त जगत की देहरी के और निकट, और भी निकट आता हुआ, यहाँ तक कि द्वार खुल जाएँ, और वह वहाँ प्रवेश करे। वह अपने को अपरिचित न पाएगा। जो स्वर उसका अभिवादन करेंगे, वे पवित्र जनों के स्वर होंगे, जो अदृश्य रहते हुए पृथ्वी पर उसके सहचर थे—वे स्वर, जिन्हें उसने यहीं पहचानना और प्रेम करना सीखा था। जिसने परमेश्वर के वचन के द्वारा स्वर्ग के साथ संगति में जीवन व्यतीत किया है, वह स्वर्ग के सहचर्य में अपने को गृहवत् पाएगा। शिक्षा, 123-127.